अंधश्रद्धा और ठगी की उपज हैं अमरनाथ के बर्फ़ानी बाबा

स्वामी अग्निवेश

जम्मू–कश्मीर की पहाड़ियों में अमरनाथ जी के तीर्थयात्रियों को साढ़े तेरह हज़ार फुट की ऊँचाई पर जाकर जिस बर्फ़ानी बाबा के दर्शन करने का अवसर मिल रहा है उसे भूगोल के विद्यार्थी स्टैलेक्टाइट नामक बर्फ़ का पुतला जानते हैं। लगभग महीने भर में ही पिघल जाने वाले बर्फ़ के इस स्टैलेक्टाइट पुतले को मुरादें पूरी करने वाले भगवान शिव का प्रकट होना मानकर जोखिम भरे रास्तों से वहां जाना एक बहुप्रचारित अंधश्रद्धा की उपज है। 150 वर्ष पहले आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानंद और उनके बाद उन्हीं की परंपरा में विख्यात योगी योगेश्वरानंदजी ने इस कथित शिवलिंग की पूजा को अंधविश्वासपूर्ण बताया था। कई बार यह बर्फ़ानी बाबा यात्रा शुरू होने से पहले ही ग्लोबल वार्मिंग की वजह से पूरी तरह पिघल जाते हैं जैसा कि आज से 5 वर्ष पहले हुआ था और तब जम्मू–कश्मीर के तत्कालीन राज्यपाल जनरल सिन्हा ने अपने हेलीकाप्टर में कृत्रिम बर्फ़ ले जाकर पुतला फिर से खड़ा किया ताकि लाखों श्रद्धालुओं की अंधश्रद्धा का पूरा दोहन किया जा सके। इस बार भी मीडिया रिपोर्टों के अनुसार अमरनाथ यात्रा शुरू होने के कुछ दिन बाद ही संभवतः तीर्थयात्रियों की अधिकता से बर्फानी बाबा पिघलना शुरू कर चुके हैं और तीर्थ यात्रा आयोजकों के लिए धर्मसंकट भी पैदा हो रहा है।

वेदों के अप्रतिम विद्वान महर्षि दयानंद ने माता–पिता और गुरुजनों की सेवा को ही तीर्थ बताया और शिव का अर्थ सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता एवं सृष्टि के कण–कण में विद्यमान परमात्मा की कल्याण भावना बताया। जहां तक अमरनाथ गुफा में प्रकट होने वाले बर्फ़ के पुतले का सवाल है, यह प्राकृतिक सौंदर्य का विषय हो सकता है और इसी तरह के प्राकृतिक बर्फ़ के पुतले स्विट्जरलैंड, ऑस्ट्रिया तथा अन्य देशों के बर्फ़ानी पहाड़ों पर भी देखे जा सकते हैं। उदाहरण के लिए नीचे दिया हुआ चित्र–

यूरोप में अमरनाथ की तरह बर्फ़ की आकृतियाँ–
क्या इन्हें भी पूजेंगे ???

मेरा उद्देश्य किसी की धार्मिक भावना को ठेस पहुँचाने का नहीं है। मैं हिन्दू और मुस्लिम और ईसाई सभी समाज के लोगों को अपने–अपने धर्मगुरुओं के धार्मिक अंधविश्वास के जाल में फंसने से बचाना चाहता हूँ।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने लोकसभा में दिए अपने पहले भाषण में ग़रीबी मिटाने के रास्ते में अंधश्रद्धा से मुक्ति दिलाना अपनी सरकार का कार्यक्रम बताया। हमें उनके इन उद्‌गारों का स्वागत करते हुए और संविधान की धारा 51A में प्रत्येक नागरिक के लिए दिए गए मौलिक कर्तव्यों का पालन करते हुए अंधविश्वास और अंधश्रद्धा फैलानेवाले पोंगापंथियों से सावधान रहना पड़ेगा जो लोगों को चमत्कारवाद की चपेट में लेकर, मुरादें पूरी करने का भ्रम फैलाकर भोलेभाले लोगों की धार्मिक भावना का शोषण करते हैं और हर संभव तरीक़े से चढ़ावे पर चढ़ावा बटोरकर धर्म को ठगी का व्यापार बना देते हैं।

E-mail – agnivesh70@gmail.com